मैथिली भाषा- साहित्यक रूपरेखा

डा. विजयेन्द्र झा

पूर्व प्रधानाचार्य, सम्प्रति, अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एल. एन. टी. कालेज, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश : मैथिली मिथिला जनपद की एक प्राचीनतम भाषा है, जिसकी प्राचीनता की तार त्रेतायुग से जुडी है। यह संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश (अवहट्ठ) भाषाओं की सीमा को पार करते हुए अपनी वर्तमान स्वरूप में स्थित है। मैथिली, साहित्यिक रूप से भी अत्यन्त समृद्ध है जिनका इतिहास सातवीं शताब्दी के 'डाक' एवं सिद्धसाहित्य से प्रारंभ होता है। वर्तमान मैथिली 'डाक-घाघ', सिद्धसाहित्य, लोकसाहित्य, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, चन्दा झा, हरिमोहन झा, यात्री आदि की रचनाओं से समृद्ध होता रहा है। आधुनिक काल में भी मैथिली साहित्य की विभिन्न विधा-- महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक (कविता), कथा, उपन्यास, नाटक, आलोचना, पत्र-पत्रिकाओं के बल पर अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के समक्ष खडी है। वर्तमान में मैथिली भारतीय संविधान की अष्टम सूची में संबद्ध है तथा भारत सरकार की सर्वोच्य साहित्यिक संस्था 'साहित्य अकादेमी' से, करीब साठ वर्षो से, अपनी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में पुरस्कृत होती रही है। प्रस्तुत आलेख में, संक्षिप्त रूप में, मैथिली-भाषा-साहित्य के विगत पन्द्रह सौ वर्षों की विकास-प्रक्रिया की झाँकी प्रस्तुत है।

बीज-शब्दः जनपदीय, मानुषी, पालि-प्राकृत-अपभ्रंश, वर्णरत्नाकर, नामकरण, लौकिक, आर्यभाषा, भारोपीय, ऐतिहासिक, परम्परा, सिद्धसाहित्य, विद्यापति, आलोचना, काव्यशास्त्र, वर्तनी, मानकता, आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिककाल

भूमिका

मैथिली बिहार राज्यक एकटा प्रमुख भाषा थिक, जे बिहारक मिथिला क्षेत्रमे करीब ४ कडोर लोक द्वारा बाजल जाइत अछि। ई समस्त आधुनिक भारतीय भाषामे प्राचीनतम अछि। प्राचीन कालहिसँ मिथिला क्षेत्रकेँ एकटा स्वतंत्र अस्तित्वक रूपमे मानल जाइत रहल अछि। एहि क्षेत्रक जनपदीय भाषाक अस्तित्व रामायणकार आदिकवि महर्षि वाल्मीकिक समये सँ विद्यमान छल जे लंकाक अशोक वाटिकामे सीतासँ पहिल वार्ता करबाक लेल हनुमानजी द्वारा भाषा संबंधी तर्कयूक्त निर्णयसँ ज्ञात होइत अछि:

" वाचं चोदाहरिष्यामि मानुषीमिह संस्कृताम्।
यदिवाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना सा सीता भीता भविष्यति।
वानरस्य विशेषेण कथं स्यादभिभाषणम्।
अवश्यमेववक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्। " 1

उपर्युक्त श्लोक एहि तथ्यक प्रमाण सिद्ध करैत अछि जे अशोक वाटिकामे सीतासँ हनुमानजी जाहि देशीभाषामे संबोधन कएने छलाह, ओ भाषा "मानुषी" छल आ' एही "मानुषी" बोलीसँ सिद्ध होइत अछि जे ओहि समय 'संस्कृत' आ' 'मानुषी' दुनू पृथक्-पृथक् भाषा बाजल जाइत छल। संभवतः एही "मानुषी" लोकभाषाक दूटा रूप रहल होएत- 'संस्कृत' आ' 'असंस्कृत'। संस्कारसँ युक्त इएह " मानुषी" भाषा तत्कालीन मिथिला जनपदक सभ्य समाजक भाषा रहल होयत। ई लोकभाषा 'पालि', 'प्राकृत' 'अपभ्रंश' वा 'अवहट्ठ'क स्तरकेँ पार करैत मैथिली स्वरूप ग्रहण कएलक तथा मैथिलीक विभिन्न

साहित्यिक विधा दिनानुदिन विकासक पथपर अग्रसर होइत रहल अछि।

मिथिला जनपदीय भाषाक प्राचीनतम स्वरूप महावीरक मूल वचन अर्द्धमागधीमे खोजल जाए सकैछ। भगवान् बुद्धक मूल वचन सेहो भिन्न नहि छलनि। अपभ्रंश कालहिसँ पूर्वक साहित्यिक रचना आब अपरिचित भ' गेल अछि। ओहि समयहिँ सँ मिथिलामे साहित्यिक परम्परा विद्यमान अछि। प्राच्य अपभ्रंश एहि क्षेत्रक तत्कालीन स्वरूप छल जे मिथिला अपभ्रंश नामे अभिहित भेल आ' पश्चात् अवहट्ठ नामसँ जानल जाए लागल। एकर रचना आ' प्रचार-प्रसार पंडितलोकनिसँ भिन्न जन सामान्यमे भेल। मिथिलाक विद्वान् पंडित ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा सर्वप्रथम मैथिली गद्यग्रन्थ " वर्णरत्नाकर"(1324 ई.) 'क रचना कएल गेल।स्पष्टतः एहिसँ पूर्व एहि भाषाक साहित्य मौखिक रूपसँ प्रचलित होइत रहल। 2 एकर मूल कारण छल- लोकभाषाकेँ राजाश्रयक अभाव। न्यान्यदेवक कर्णाट राजवंश (1097ई.)'क उदयसँ एकरा राज्याश्रय भेटल तथा साहित्यिक रचना, एहि भाषामे प्रारंभ भेल। निष्कर्षतः कहल जाए सकैछ जे कर्णाटवंशक राज्यकालहि (1097-1324) सँ मैथिली भाषा, साहित्यक रूपमे अंकुरित भेल। ओइनवारवंश काल (1325-1556) मे पल्लवित आ' खण्डबला कुलक समय पुष्पित भेल। एहि प्रकारेँ मैथिली भाषाक उत्स त्रेतायुगक रामायण कालहिँसँ रहल अछि अथवा एना कही जे ओहुसँ पहिनहुँ सँ रहल होएत, जे विभिन्न विकासक प्रक्रियाकेँ पार करैत, विभिन्न कालखण्डमे, विविध नामसँ परिचिति होइत आइ अपन वर्तमान स्वरूपमे "मैथिली" नामे जानल जाइत अछि।

1.1 मैथिली-नामकरण

मिथिला क्षेत्रक भाषाक लेल सर्वप्रथम 'अवहट्ठ' वा 'मिथिलापभ्रंश' नामक उल्लेख विभिन्न ग्रन्थसभमे भेटैत अछि। एकरा 'संस्कृत' आ' 'प्राकृत'सँ उद्भूत 'देशीभाषा' वा 'देसिल वयना' कहल गेल। द्रष्टव्य अछि:

" प्राकृतादल्पभेदैव ह्यपभ्रष्टा प्रकीर्तिता
देशभाषां तथा केचिदपभ्रंश विदुर्बुधैः।
संस्कृते प्राकृते वापिरूपसूत्रानुभेद्यतः
अपभ्रंश स विज्ञेयो भाषा यत्रैव लौकिकाः।। "3

परम्परासँ मिथिलामे 'अपभ्रंश' शब्दकेँ 'लौकिक संस्कृत' आ' 'प्राकृत'सँ फराक कोनो आन स्थानीय बोली बुझल जाइत छल। महाकवि विद्यापति द्वारा कहल गेल 'देसिल वयना'क अर्थ-बोध 'देशभाषा'क रूपमे होइत रहल। मैथिली साहित्यक आदिकालो मे कतहु मैथिली शब्द दृष्टिगत नहि होइत अछि। 14म शताब्दीमे कविशेखर ज्योतिरीश्वर द्वारा रचित ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'मे सेहो कतहु मैथिली शब्द नहि भेटैत अछि। जँ बंगलासँ पृथक् कोनो "गौड-भाषा"केँ मैथिलीक
भाषा बुझल जाए तँ एकर नाम अमीर खुसरो द्वारा 1253 ई. मे अवश्य लेल गेल छल, मुदा से 'मैथिली' कहि नहि। तेँ मिथिलाक जनभाषाक लेल मैथिली शब्द अत्यन्त नबीन नाम अछि।

सबसँ पहिने मैथिली भाषाक चरचा भारतीय भाषा सर्वेक्षण रूपक बेलिगत्तीकृत "आल्फावेटम ब्राह्मनिकम्" (1777ई.) मे, अम्दुजक भूमीकामे भेटैत अछि। एहिमे अनेक भाषाक सूचीक संग मिथिलाक भाषा लेल "तिरुतिआना"
(Tourutiana) वा "तिरुहुतिया" नामसँ उल्लेख भेटैत अछि। पश्चात् अनेक पाश्चात्य विद्वानलोकनि, जेना- एच. टी. कोलब्रुक आ' विलियम कैरी (1801ई.), अर्सिकन पेरी (1853ई.), फेलन आ' कैम्पवेल (1875), हार्नले (1880 ई.), केलाँग (1893 ई.). आदि मिथिलाक भाषाक नामकरण कएलनि; मुदा, एहिमे सँ एकहुँटा

नाम वर्तमान मैथिलीसँ पूर्णतः साम्य नहि रखैत अछि। 4 एमहर मिथिलाक विद्वानलोकनि सेहो एहीठामक भाषाक लेल "मैथिली " नामक प्रयोग नहि कए, "मिथिलाभाषा" नामे संबोधित करैत रहलाह। एहि शब्दक प्रयोग ज्योतिरीश्वर आ' विद्यापति कालमे सेहो देखल जाए सकैछ। विद्यापति तँ अपन रचनामे मिथिलाक भाषाक लेल "देसिल वयना"क प्रयोग कएलनि अछि। पश्चात् पूर्व आधुनिककाल (1860-2000 ई.) मे सेहो एकरा लेल अनेक विद्वान् द्वारा "मिथिलाभाषा" शब्दक प्रयोग भेटैत अछि; जेना- चन्दा झा -मिथिलाभाषा रामायण; मुकुन्द झा 'वक्शी'- मिथिलाभाषामय इतिहास आदि कृतिक शीर्षक देखल जाए सकैछ।

मैथिलीकेँ एक स्वतंत्र भाषाक भाषिक रूपमे स्थापित करबाक यश अन्ततः पाश्चात्य विद्वान् जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सनकेँ जाइत छनि, जे 1880 ई. मे एकरा "मैथिली" (Maithili) नामे सर्वदाक लेल स्थापित क' देलनि। 5

1.2 भारतीय आर्यभाषा

भाषा- समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषासबमे मैथिली प्राचीनतम भाषा अछि। अन्य भारतीय भाषासबहिक भाँति मैथिली भाषाक उद्भव आ' विकास संस्कृतहिसँ भेल अछि। अर्थात् समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (मैथिली, हिन्दी, बंगला, असमिया, उडिया, नेपाली, भोजपुरी, मगही, पंजाबी, राजस्थानी, मराठी, सिन्धी, कश्मीरी आदि) 'क 'जननी' संस्कृते अछि। मैथिली भाषा, भारोपीय परिवार (2500 ई. पू.; Indo-European Family) 'क अन्तर्गत अबैत अछि जकर विकासक्रम निम्न रूपेँ अछि :

"भारत-ईरानी (2000 ई. पू.) > भारतीय आर्यभाषा (1500 ई. पू.) > लौकिक संस्कृत > प्राच्य प्राकृत > मागधी प्राकृत > मागधी अपभ्रंश (अवहट्ठ) > मैथिली, असमिया, उडिया, बंगला आदि। अवहट्ठक बाद मैथिलीक स्थिति प्राचीन मैथिली > मध्यकालीन > आधुनिक मैथिलीक रहल अछि। " 6

ध्यातव्य जे अन्य भारतीय आर्यभाषा जखन प्राकृत कालक पश्चात् अपभ्रंशक परिधिमे चक्कर लगा रहल छल, ओही समय मिथिला-क्षेत्रक भाषा प्राकृतसँ सोझे अवहट्ठपर पहुँचि चुकल छल, जे प्राचीन मैथिलीक सद्यः पूर्वक भाषा अछि।

लिपिः मैथिली एकटा स्वतंत्र भाषा थिक, जकर अपन पृथक् लिपि अछि, जकरा "तिरहुता" वा " मिथिलाक्षर" कहल जाइत अछि। ओना 19'म शताब्दीक मध्य अबैत-अबैत मैथिली 'देवनागरी' लिपि अपनाए लेलक, जाहिसँ मैथिलीक स्वायत्तता थोडे'क कमजोर अवश्य भेल आ' किछु मैथिली विरोधीलोकनिकेँ "मैथिली हिन्दीक बोली थिक", जेकाँ मिथ्या असफल प्रलाप गढबाक अवसर अवश्य भेटि गेलनि। एहि षडयंत्रमे ओ सफल सेहो भ' जइतथि; मुदा, मैथिली भाषाक जडि एतेक मजगूत अछि जे ओलोकनि एहि षडयंत्रमे पूर्णतः असफल रहलाह, आ' आइ मैथिली एकटा स्वतंत्र भाषाक रूपमे स्थापित अछि तथा प्रत्येक भारतीय भाषाक समकक्ष ठाढ अछि। जहाँ धरि "तिरहुता लिपि"क प्राचीनता आ' विकासक प्रश्न अछि तँ एकर उद्भव "ब्राह्मी लिपि"सँ भेल अछि। समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक लिपिक जननी ब्राह्मीए लिपि थिक। तिरहुता लिपिक विकासक्रम निम्न रूपेँ देखल जाए सकैछ।

"ब्राह्मी लिपि (प्राचीन भारतक लिपि) > कुषाण लिपि > गुप्त लिपि > कुटिल लिपि > पूर्वी कुटिल लिपि > मैथिली, बंगला, असमिया, उडिया, नेपाली आदि। " 7

ध्यातब्य जे मिथिलाक किछु विद्वान् तिरहुता लिपिक उद्भव "वैदेही लिपि" कैं सेहो मानैत छथि।

1.3 मैथिली साहित्य : ऐतिहासिक परम्परा

मैथिली साहित्यक इतिहास अत्यन्त प्राचीन अछि। जँ एकरा कालखण्डक कसौटीपर कसल जाए तँ एकरा पाँच कालखण्डमे बाँटल जाए सकैत अछि। 8 - पूर्व आदिकाल (700-1300), उत्तर आदिकाल (1300-1600), मध्यकाल (1600-1860), पूर्व आधुनिककाल (1860-2000) तथा उत्तर आधुनिकाल (2000-अद्यावधि)। पूर्व आदिकालकैं मैथिली साहित्यक आधारकाल सेहो कहल जाइछ। एकर समय 7'म शताब्दीसँ 13'मशताब्दी तक इतिहासकारलोकनि निर्धारित कएलनि अछि। एकरा अन्तर्गत समस्त मैथिली साहित्यक आदिकालीन सामग्री- डाकवचन, सिद्धसाहित्य, लोकसाहित्य, मैथिलीमे प्रयुक्त मोहाबरा आ' लोकोक्ति तथा मैथिली साहित्यक अंकुरण आ' प्रस्फुटनकैं मौखिक आ' लिखित साक्ष्यसभक अन्वेषणक आधारपर राखल गेल अछि। डाक आ' सिद्धाचार्यलोकनिकैं मैथिली साहित्यक आदि कवि मानल जाइत छनि। डाक एक ज्योतिषी, कृषिवैज्ञानिक, भूगर्भवेत्ता छलाह। हिनक जन्म एक गोप-कन्याक गर्भसँ भेल छल तथा ओ प्रसिद्ध विद्वान् वराहमिहिर (537ई.)'क पुत्र छलाह। मैथिली साहित्यमे डाक, घाघ, भड्डरीक अनेक जनोपयोगी, नीतिविषयक, कृषि-मौसम संबंधी आदि पद भेटैत अछि। डाकक नम्नपद द्रष्टव्य अछि- 9

(क) " थोडकैं जोतिह', खूब मोहिअबिह ऊँचकैं जोतिह' आरि।
ताहू से जँ नहि उपज' तँ डाककैं टदिह' गारि ।।
"

(ख) " शुक्र दिना के बादरी, रहे सनीचर छाय।
कहे डाक सुनु डाकिनी बिनु वर्षा नहि जाय।। "

डाक, घाघ, भड्डरीक पदसभ मिथिलामे 'डाकवचन'क नामसँ उपलब्ध अछि। एहि वचनसबहिक भाषाकैं देखि एना प्रतीत होइछ जे परवर्ती रचनाकारलोकनि हिनकहि नामपर पद गढैत गेल होएताह, कारण सूक्ष्मतासँ एहि वचनसभकैं पढलापर लगैत अछि जे ई 14'म-15'म शताब्दीक भाषा होअए। एहि कालखण्डक मैथिली साहित्यक सर्वाधिक प्रसिद्ध कविलोकनिमे सिद्धाचार्यलोकनिक नाम अबैत अछि। हिनकहि लोकनिक द्वारा रचित सिद्धसाहित्यक अन्वेषण म. म. हरप्रसाद शास्त्री 1907 ई. मे, अपन नेपाल यात्राक क्रममे कएलनि, जकरा ओ बौद्धगान ओ दोहाक नामे 1907 ई. मे "बंगीय साहित्य परिषद्", कलकत्तासँ प्रकाशित करबओलनि। "बौद्धगान ओ दोहा"मे तीन पोथीकैं राखल गेल अछि- चर्याचर्यविनिश्चय, दोहाकोश आ' डाकार्णव। एही "बौद्धगान ओ दोहा"मे संकलित सिद्धाचार्यसबहिक रचनाकैं "सिद्धसाहित्य" वा "चर्यापद"क नामसँ अभिहित कएल जाइत अछि।

चर्यापदक रचनाकार मैथिली साहित्यक पूर्व आदिकालक (700-1300 ई.) 84 सिद्धगणमे सँ 23 सिद्धगण छलाह जे समस्त मिथिलामे घूमि-घूमि, एहिठामक लोकभाषामे अपन मतक प्रचार करैत छलाह। एहि बौद्धभिक्षुगणमे सरहपाद, शबरपाद, लुइपाद, थिरूपाद, डोम्बिपाद, दरिकपाद, कुक्कुरिपाद, कमरिपाद, काण्हपाद, गौरक्षपाद, तिलोपाद, शान्तिपाद आदि प्रमुख छलाह। ई सब नालन्दा आ' विक्रमशिला विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध छलाह, जे गुरु-शिष्य परम्परासँ आगाँ बढैत छल। एहि प्रकारेँ नओ गुरु-शिष्य परम्परा छल, जाहिमे पहिल परम्परा सरहपादसँ प्रारम्भ भेल आ' अन्तिम नओम गुरु शान्तिपाद छलाह। सिद्धाचार्यलोकनि मूल रूपेँ तत्कालीन पालवंशीय राजालोकनिक, जाहिमे

धर्मपाल (769-809 ई.), देवपाल (809-974 ई.) तथा महीपाल (974-1024 ई.) द्वारा संपोषित छलाह। सिद्धगणक मूल सिद्धान्त सांसारिक भौतिक सुख-भोगे छल। ई सिद्धगण सनातन धर्मक घोर विरोधी छलाह। हिनक कहब छल जे यज्ञ, होम, पूजा, पाठ, आदि मोक्ष प्राप्तिक लेल एक अन्धविश्वास थिक। ई सब पंचमकारे कैं मोक्ष प्राप्तिक आधार मानैत छलाह

"मद्यं मासं च मीनं च मुद्रा मैथुन मेव च।
एते पंचमकारस्तु मोक्ष दायनी युगे युगे।।"10

अर्थात् शराब,माछ, मासु, माणिक आ' मैथुन; इएह पाँच भौतिक वस्तुक प्राप्तिए मोक्षक साधान थिक। एहिमे स्त्री-देह-सुखकैं विशेष महत्व देल गेल छल, इएह कारण अछि जे बौद्धधर्ममे, पश्चात् गुह्यमे, भिक्षुणी सबहिक प्रवेश भ' गेल, जे एकर पतनक मुख्य कारण बनल।

आलोच्यकाल-खण्डमे मैथिली साहित्य मध्य लोकसाहित्य एक महत्वपूर्ण विधा थिक जाहिमे तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परम्परा आ' स्थिति-परिस्थितिक झाँकी भेटैत अछि। मैथिली लोकसाहित्यक अन्तर्गत लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनृत्य, मोहाबरा, लोकोक्ति आदिकैं राखल गेल अछि। लोकसाहित्यक रचनाकार प्रायः अज्ञात होइत छथि तथा ई मौखिक परम्पराक आधारपर एक कण्ठसँ दोसर कण्ठमे आ' एक पीढीसँ दोसर पीढीमे हस्तान्तरित होइत रहैत अछि। मैथिलाक लोकगीतमे विविध विधि-व्यवहार आ' षोडस संस्कारक अवसरपर मानवीय मनोभावकैं गेयात्मक रूपैं व्यक्त कएल जाइत अछि। लोकगाथा एवं लोककथामे मिथिलाक महान् विभूति आ' वीर पुरुषलोकनिक कीर्तिगाथा वर्णित रहैत अछि। एहिमे अल्हा-ऊदल, नैकाबनिजारा,कुमर बिजुभान, लोरिक, दुलरादयाल, अनंग कुसमा, सलहेस, दीनाभद्री आदि तथा छठि अनन्तपूजा, सत्यनारायण पूजा, मधुश्रावणी आ' बाल मनोरंजन एवं नैतिक शिक्षा परक कथासबहिक समावेश रहैत अछि। एहिना लोकनृत्यक अन्तर्गत जट-जटिन, कठपुतरी आ' कठघोडबा नाच, बिपटा नाच, छकरबाजी, लीला नाट्य (नृत्य) आदिकैं राखल गेल अछि।

पूर्व आदिकालमे मिथिलामे प्रचलित मोहाबरा, लोकोक्ति, प्राचीन संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राकृतपैंगलम्, आदि ग्रन्थसभमे प्रयुक्त मैथिली शब्दसबहिक प्रयोग भेटैत अछि; जेना- वाचस्पति मिश्रक वेदांग सूत्र-शंकर भाष्य-टीका "भामती"; हेमचन्द्रकृत "काव्यानुशासन"; सर्वानन्दक "अमरकोश-टीका"; चण्डेश्वर ठाकुरकृत "सप्तरत्नाकर"; रुचिपति उपाध्याय आ' जगद्धरक रचनासबमे प्रयुक्त अनेक मैथिली शब्द; रोडाकविकृत "राउरवेल" (अपभ्रंश) ; "प्राकृतपैंगलम्"मे प्रयुक्त मैथिली शब्दसब आदि। मैथिलीक एहि सुच्चा शब्दसबसँ मैथिली भाषाक प्राचीनताक अनुमान लगाओल जाए सकैछ।

मैथिली साहित्यक उत्तर आदिकाल आ' मध्यकाल क्रमशः ' गीतकाव्य'क लेल प्रसिद्ध रहल अछि। मैथिली साहित्यक उपलब्ध लिखित साक्ष्य उत्तर आदिकालहि (1300-1600ई.) सँ भेटैत अछि, जतए समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषामे पहिल गद्य-ग्रन्यक रूपमे मिथिलाक विद्वान् पंडित ज्योतिरीश्वर ठाकुर (1280-1340ई.)'क 'वर्णरत्नाकरे'(1324 ई.) अद्यावधि उपलब्ध अछि। एकर अतिरिक्त हिनक पहिल त्रैभाषिक नाटक "मैथिली धूर्तसमागम" सेहो उपलब्ध अछि, जे बौद्धग्रन्थ 'धुत्तर्न्यान'क प्रतिक्रिया स्वरूप लिखल गेल, जाहिमे सनातन साधु-संत-महात्मा, पंडित-पुजारी आदिकैं ढोँगी, कपटी, अन्धविश्वास पसारए बला आदि कहि आलोचना

कएल गेल अछि। पश्चात् मैथिली साहित्यमे महाकवि विद्यापति (1350-1450 ई.) 'क पदार्पण होइत छनि, जे संस्कृतमे दर्जन भरिसँ बेसी;अवहट्ठमे तीन पोथी- कीर्तिलता (1402-05), कीर्तिगाथा (1402-05) आ' कीर्तिपताका (1414); एक त्रैभाषिक (संस्कृत, प्राकृत, मैथिली) नाटक तथा करीब हजार स्फुट शृंगार आ' भक्तिभावयुक्त मैथिली पदसबहिक रचना कएलनि। विद्यापतिक कवितासबहिक अग्नि (धार, नोक) आ' परम्पराक प्रवाह एतेक तीव्र छल, जे मध्यकालक बान्हकेँ तोडैत, यत्किंचित् पूर्व आदिकालमे सेहो पसरि गेल; जेना-चन्दा झा, जीवन झा, विन्ध्यनाथ झा, गणनाथ झा सत्यनारायण झा आदिक प्रारंभिक रचनासबमे देखल जाए सकैछ। संगहि विद्यापतिक प्रभाव एतेक छल जे मिथिलाक अतिरिक्त बंगाल, आसाम, उडीसा, नेपाल आदि प्रान्तहुँमे हिनका एकटा बैष्णव संतक रूपमे जानल जाए लागल। एहि प्रान्तसभमे विद्यापतिक रचनासभमे ओहिठामक क्षेत्रीय भाषाक शब्दसभकेँ घोँसिआए कए एकटा नकली भाषाक जन्म भेल, जे "ब्रजबुलि साहित्य"क नामे लोकप्रिय भेल। विद्यापतिक एहि पदसभसँ प्रभावित कविलोकनिमे बंगालक नदियाक चैतन्यदेव (1486-1534 ई.), गोविन्ददास (मिथिलाक गोविन्ददाससँ भिन्न), बलरामदास, नरोत्तमदास (1583 ई.), रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861-1941ई.), जनमेजय मित्र, बंकिमचन्द्र चटर्जी (1838-1994 ई.), राजकृष्णराय (1855-1993 ई.) आदि छथि। एहि प्रकारेँ बंगालक ब्रजबुलि साहित्यमे रवीन्द्रनाथ ठाकुरक "भानुसिंह ठाकुरेर पदावली"(1884 ई.), राधामोहन ठाकुरक "पदामृत समुद्र" (1725 ई.), गोकुलानन्द सेनक "पदकल्पतरु"(1750 ई.), दीनबंधुदासक " संकीर्तनामृत" (1771ई.) आदि तथा आसाममे शंकरदेव (1449-1568 ई.), माधवदेव (1489-1596 ई.), गोपालदेव (1547-1611 ई.), रामचरण ठाकुर आदि एवं उडीसामे नृप बैद्यनाथ, रमानन्दराय, चम्पत राय (1479-1532 ई.), महाराज प्रतापरुद्रदेव (1504-32 ई.), माधवीदासी, राय दामोदरदास, चान्दकवि, यदुपति आदिक रचनासब प्रमुख रूपेँ भेटैत अछि।

मिथिलामे विद्यापतिक समकालीन आ' परवर्ती कविलोकनि विद्यापतिक काव्यपरम्पराकेँ आगाँ बढओलनि। समकालीन कविलोकनिमे अमृतकर (1400-1482 ई.), हरपति (14'म सदी), चन्द्रकला, भानुकवि (1450-1500 ई.), गजसिंह, दशावधान ठाकुर, विष्णुपुरी (1425-1500 ई.), यशोधर, कंशनारायण आदि छलाह। परलर्ती कविलोकनिमे महेशठाकुर (1557-90), चतुर चतुर्भुज, रागतरंगिणीक रचनाकार लोचन (1625-1702 ई.), शृंगारभजनावलीक रचयिता गोविन्ददास, पारिजातहरण नाटकक रचनाकार उमापति उपाध्याय, रामदास, लालकवि, रमापति, नन्दीपति, रत्नपाणि, हर्षनाथ झा (उषाहरण, माधवानन्द) आदिक नाम प्रमुखतासँ लेल जाए सकैत अछि। मैथिली साहित्यक मध्यकाल (1600-1860 ई.) उमापतिसँ प्रारंभ होइत अछि आ' हर्षनाथ झा लग जा कए समाप्त होइछ। ई कालखण्ड नाट्य साहित्यक स्वर्णकाल रहल अछि। एहि अवधिमे उमापतिक 'पारिजातहरण', रमापतिक 'रुक्मिणी स्वयंवर', लालकविक 'गौरी स्वयंवर', नन्दीपतिक ' श्रीकृष्णकेलिमाल', हर्षनाथ झाक ' उषाहरण' आ' 'माधवानन्द' आदि त्रैभाषिक नाट्यविधाक प्रतिनिधि पुस्तक अछि। मध्यकालक मैथिली साहित्यमे नाट्य साहित्यक उत्कर्ष भेटैत अछि। एहि प्रकारक मैथिली त्रैभाषिक नाटक सबहिक रचना मिथिलाक अतिरिक्त आसाम, नेपाल आ' स्वाल्प रूपमे बंगालमे सेहो लिखल गेल। मिथिलाक मैथिली नाटककेँ 'कीर्तनियाँ नाटक', आसामक नाटककेँ 'अंकीया

नाट' बंगालक नाटककेँ 'यात्रा' आ' नेपालमे रचित त्रैभाषिक मैथिली नाटककेँ 'संगीत नाटक'क नामसँ जानल जाइत अछि। एहि अवधिमे अंकीयानाट' आ' नेपालमे रचित मैथिली नाटक साहित्यिक दृष्टिएँ अत्यन्त समृद्ध रहल। आसामक मैथिली नाटककारलोकनिमे शंकरदेव (1449-1568) 'क 'कालियदमन' (1518), 'पत्नीप्रसाद' (1521), 'केलिगोपाल' (1540), 'रामविजय' (1568), 'रुक्मिणीहरण' (1568) तथा 'उषाहरण' (1568); माधवदेवक आठ गोट, गोपालदेवक दूगोट तथा तथा अन्य नाटककारलोकनि अनेक मैथिली नाटकक प्रणयन कएलनि। एहिना नेपालक मल्ल दरबारमे सेहो अनेक मैथिली नाटक लिखल गेल, जाहिमे जगज्ज्योतिर्मल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल, सुमतिजितामित्रमल्ल, रणजितमल्ल, श्रीनिवासमल्ल आदिक रचना प्रमुख अछि।

मध्येकालहिमे मैथिली गद्यक अंकुरण प्रारंभ भेल, जकर स्वरूप वर्णरत्नाकरक गद्यसँ भिन्न छल। एहिमे मैथिली नाटकक अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ कृतिसभमे अंकुरित मैथिलीक शब्द-पद-वाक्य तथा शिलालेखीय गद्य, प्राकृतपैंगलम्, वर्णरत्नाकर आ' दैनन्दिन जीवनमे प्रयुक्त होमयबला चिट्ठी-पत्री आदिक गद्य एवं राजकीय अभिलेखादि ; जेना- एकरारनामा, गौरिव-चाटिका, बहिखत, अजातपत्र, निस्तारपत्र, फैसलापत्र आदिक प्रयोग देखल जाए सकैछ। 12 मैथिली गद्य-साहित्यक असली स्वरूप पूर्व आधुनिककाल (1860-2000 ई.) मे भेटैत अछि। एकर प्रारम्भ मैथिली पत्र-पत्रिकाक विकास होएबाक पश्चातहिँ भेल। मैथिली भाषामे पत्रिकाक विकास 19'म शताब्दीक पहिल दशकसँ प्रारंभ होइत अछि। मैथिलीक पहिल पत्रिका ' मैथिल हित साधन' (1905) जयपुरसँ, मिथिला मोद (1906) वाराणसीसँ, मिथिला मिहिर (1906) दरभंगासँ प्रकाशित होबए लागल। पश्चात् बहुसंख्य मैथिली पत्रिकासब प्रारंभ भेल। आइ मैथिली भाषामे अनेक उच्च कोटिक पत्र-पत्रिका, शोधसंग्रह जेना- कोसा, मैथिली, घर-बाहर, मैथिल पुनर्जागरण, कोसी संदेश, पूर्वोत्तर मैथिली, कर्णामृत आदि वार्षिक, छओ मासिक, त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक आ' दैनिक रूपमे प्रकाशित भ' रहल अछि।

साहित्यिक विकास यात्रामे मध्यकालक अन्तिम मानक पद्य रचनामे मनबोधकृत 'कृष्णजन्म'क नाम लेल जा सकैछ। पश्चात् कवीश्वर चन्दा झा (1831-1907) 'क पदार्पण होइत छनि, जे मैथिली साहित्यक स्वरूपहिँकेँ बदलि देलनि। चन्दा झा अपन रचनामे विषयगत, भावगत, भाषागत, विधागत आ' समाज-सापेक्ष परिवर्तन कएलनि। मैथिली साहित्यमे एक दिसि जत' विद्यापतिक 'पुरुषपरीक्षा'क पहिल बेर अनुवाद (1888) कए अनुवाद विधाक प्रारंभ कएलनि, ओतहि दोसर दिसि 'मिथिलाभाषा रामायण' आ' स्फुट पदसबहिक लोकभाषामे रचना कए एक नबीन परम्पराक शुभारम्भ कएलनि। मध्यकालक संस्कृतनिष्ठताक जालकेँ तोडि मिथिलाक सुदूर ग्रामभाषा प् हिनकहिँ रचनासँ नब रूपेँ प्रारंभ होइत अछि। इएह कारण अछि जे हिनकहिँ (चन्दा झा)'सँ पूर्व आधुनिककाल (1860-2000 ई.)'क आरम्भ आ' हिनकहिँ प्रथम प्रयोगवादी कविक रूपमे जानल जाइत अछि। मैथिली साहित्यमे विशेष कए काव्यमे चन्दा झासँ जे नबीन परम्परा विकसित भेल ओकर अनुसरण हिनक परवर्ती कविगण करैत रहलाह, जाहिमे मुंशी रघुनन्दन दास, मुकुन्द झा 'वक्सी' गणनाथ झा, विन्ध्यनाथ झा, जीवन झा आदि छथि। एहि प्रकारेँ चन्दा झाक काव्य-परम्परा बढैत रहल। बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन लग अबैत-अबैत मैथिली काव्यमे समन्तवादी विचार जडि जमाए चुकल छल। मैथिली काव्य नमन, वंदन, अभिनन्दन

आदिसँ पूर्ण रूपेँ संपोषित होमय लागल छल। भुवनजी एहि तुष्टिकरणक प्रवृत्तिसँ ऊबि चुकल छलाह। इएह स्थिति मैथिली साहित्यक अन्य विधामे सेहो पनपय लागल। समाज दू वर्गमे बटि गेल छल- एक महामानव आ' दोसर लघुमानव। दुनू वर्गक बीच सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आ' आर्थिक विषमता अपन चरमपर पहुँचि गेल छल। लघुमानव श्रेणीक लोक समाजसँ पूर्णतः अलग-थलग भ' गेल छल। भुवनजी ओकरासभकेँ समाजक मुख्य धारासँ जोडए चाहैत छलाह। तेँ ओ प्रगतिवादक शंखनाद फूकलनि। ओ अपन काव्य-सग्रह "अषाढ" (1936 ई.) में हूँकार भरलनि :

" हम करब प्रलय, हम करब प्रलय।
रहय देब नहि, क्षणभरिओ विषकुंभक भय।"

एहि प्रकारेँ भुवनजीसँ जाहि प्रगतिवादक अंकुरण भेल, ओ बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क साहित्यमे विशाल वटवृक्षक स्वरूप ग्रहण कए लेलक। यात्रीजी अपन रचनासबमे प्रगतिवादकेँ तँ विस्तार देबे कएलनि, संगहिँ यथार्थवादकेँ सेहो प्रमुखतासँ रखलनि। इएह कारण अछि जे यात्रीजीक प्रत्येक रचना -'चित्रा', 'पत्रहीन नग्न गाछ', अथवा फेकनी, गोठबिछनी आदिमे यथार्थमूलक
कविता देखबामे अबैत अछि। यात्रीजीक बाद जखन मैथिली काव्य-धारा राजकमल चौधरी लग पहुँचैत अछि तँ ओहिमे एक नबीन स्वर आ' स्वरूप देखबामे अबैत अछि। राजकमल स्वतंत्र आ' उन्मुक्त विचारधाराक साहित्यकार छलाह। सर्वप्रथम ओ अपन गद्य-रचनामे 'फ्राइड'क विचारधाराकेँ निर्भीकतासँ रखलनि। जाहि समय मैथिली साहित्यमे 'काम' (सेक्स) संबंधी विषय पूर्णतः अग्राह्य मानल जाइत छल, ओहि समय निर्भीक रूपेँ मैथिली साहित्यमे एकटा नब विषय जोडलनि। दोसर बात ओ मैथिली कविताकेँ काव्यशास्त्रीय नियम-परिनियम (बंधन- छन्द, अलंकार आदि) सँ स्वतंत्र क' देलनि। पूर्वमे चन्दा झा मैथिली काव्यमे अनेक परिवर्तन कएलनि, मुदा प्राचीन कालक काव्यशास्त्रीय बंधनकेँ ओहो नहि हटाए सकलाह। ई शास्त्रीय बंधन काव्यमे अपन पएर जमओनहिँ रहल। वातावरण एहन छल जे बचपनमे विन्ध्यनाथ बाबूकेँ कविता लिखबाक सओख छलनि आ' ओ कविता लिखैत छलाह। ई देखि एक दिन पिता कहलथिन्ह जे गीत, कवित लिखैत छी से तँ बड बेस ! मुदा छन्दशास्त्र पढि लिअ। सुनल अछि जे कविता अगण भेने दोष लगैत अछि। एहन वातावरण, एहन परिस्थिति आ' सोचक बीच राजकमल मैथिली कविताक प्रवृत्तिकेँ आन्दोलित क' दैत छथि, स्वतंत्र क' दैत छथि। हुनक मानब छल जे कविताक लेल मात्र शब्दक आवश्यकता होइत अछि। जँ शब्द सामर्थ्य अछि तँ कविता लिखि सकैत छी, मुदा शब्द भावयुक्त होबक चाही। राजकमल अपन स्वरगंधामे लिखैत छथि:

" नहि चलत आब, नहि चलत आब, नहि चलत आब।
पुरना विधान, पुरना यति, लय, ताल, छन्द आ मात्रा।।
"

एहि प्रकारेँ राजकमल चौधरी जाहि तरहेँ मैथिली कविताकेँ स्वतंत्र कएलनि, उन्मुक्त कएलनि, ओकरा "नवकविता" कहल गेल आ' अद्यावधि ओही रीतिक कविता देखबामे अबैत अछि। एहि प्रवृत्तिक रचनाकारलोकनिमे रामकृष्ण झा 'किसुन' भीमनाथ झा, जीवकान्त, उदयचन्द्र झा 'विनोद' विभूति आनन्द, नारायणजी, रवीन्द्र नारायण मिश्र, राजकुमार मिश्र, जगदीश प्रसाद मंडल, इन्द्रकान्त झा, नीता झा, शेफालिका वर्मा, कामिनी, सारस्वत आदिक नाम गिनाओल जाए सकैत अछि।
उपर्युक्त प्रवृत्तिसँ फराक दूटा प्रवृत्तिक रचना मैथिली साहित्यमे आ'र देखबामे अबैत अछि। एहिमे पहिल

अछि “छायावाद” आ’ दोसर हास्य-व्यंग्यपरक रचना। मैथिलीमे अनेक छायावादी रचनाकार भेलाह जाहिमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क नाम अग्रणीय अछि। द्रष्टव्य अछि हुनक निम्न पाँती:

”तट नितम्बिनी मोडि-मोरि, कटि देश नृत्य रस निपुन,
कल-कल करैत, नचैत, गबैत, कछैत सतत दूत चरण।” 13

एतए सरिताकेँ एक उद्दाम प्रेमसँ संपृक्त युवतीक रूपमे प्रतिविम्बित कएल गेल अछि। छायावादमे विम्बकेँ प्रतिविम्बित कए चित्रित कएल जाइत अछि। एकर अतिरिक्त मैथीली काव्यमे हास्य-व्यंग्यक रचना सेहो होइत रहल, जाहिमे प्रमुख रूपेँ कविवर सीताराम झा, हरिमोहन झा, चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ आदिक नाम विशेष उल्लेखनीय छनि।

मैथिली गद्य हो वा पद्य कमोवेश समस्त विधामे उपर्युक्त प्रवृत्तिक रचना भेटैत अछि। मैथिलीमे महाकाव्य, खण्डकाव्य, कथा, उपन्यास, स्फुट काव्य, आलोचना, समीक्षा, यात्रा, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि तथा व्याकरण, भाषाविज्ञान, काव्यशास्त्र साहित्येतिहास आदि विधासबमे रचना भ’ रहल अछि आ’ मैथिली साहित्य आइ अत्यन्त समृद्ध आछि, जे कोनहुँ समृद्ध भाषाक बराबरी करबामे पूर्णत: सक्षम अछि।

1.4 मैथिली भाषा, वर्तनी आ’ मानकता :

मैथिली भाषाक अन्तर्गत अनेक बोली अछि जे मानक मैथिली, दक्षिणी मैथिली, पश्चिमी मैथिली (बज्जिका), पूर्वी मैथिली, छिका-छिकी मैथिली (अंगिका), जोलहा बोली तथा केन्द्रीय बोली आदिक रूपमे मिथिलाक विभिन्न विशेष भौगोलिक क्षेत्रमे बाजल जाइत अछि। 14 एहि विभिन्न बोलीसभमे प्राय: ध्वन्यात्मक साम्यता तथा परस्पर बोधगम्यता अछि। ई बोलीसभ परस्पर संवादमे प्रयुक्त होइत अछि, मुदा लिखित भाषा, जेना साहित्यिक रचनामे लेखकीय अभिव्यक्ति, शिक्षण संस्थान, शोधालेख, साहित्यिक परिसंवाद, आलोचना आ’ सैद्धान्तिक ग्रन्थसबहिक रचना मानक मैथिलीए मे होइत अछि। वर्तमानमे मैथिली भाषा अत्यन्त समृद्ध अछि, जाहिमे प्रत्येक वर्ष कतोक सए पोथी विभिन्न विधामे प्रकाशित होइत आबि रहल अछि।

1.5 मानक वर्तनी : एक दृष्टि

मैथिली वर्णमालामे कुल 47 वर्ण अछि। जाहिमे स्वरक संख्या 14, व्यजनक संख्या 25, अन्तस्थ वर्ण (य, र, ल, व)’क संख्या 4 आ’ ऊष्म वर्ण (श, ख, स, ह) ‘क संख्या 44 अछि। एकर अतिरिक्त तीन संयुक्ताक्षर- क्+ष= क्ष, त्+र= त्र, तथा ज्+यअँ = ज्ञ अछि। 15 मैथिली वर्णमालामे ध्वन्यात्मक वैषम्यताक विश्लेषण आरम्भे मे क’ देल जाइत अछि; जेना- ऊष्म ‘ष’ वर्णक उच्चारण कवर्गी ‘ख’ जेकाँ, तालब्य ‘श’ क उच्चारण दन्त्य ‘स’ जेकाँ तथा
अन्तस्थ ‘य’ चवर्गी ‘ज’ जेकाँ, ‘व’ पवर्गी ‘ब’ जेकाँ एवं ‘ऋ’ - ‘र’ (ऋण- रिन) जेकाँ उच्चरित होइत अछी।
मैथिली लिपि “तिरहुता” मे मात्रा-प्रयोगक लेल फराक विधान अछि जकरा “ककहडा” कहल जाइत अछि; जेना- तरकेटा (कए कान) ‘क’, काँइनचुन ‘का’, हरिसेँ ‘कि’, दुरघेँ ‘की’, तारे ‘कु’, बार्जन ‘कू’, एकलेँ ‘के’, दोलेँ ‘कै’, कलमत ‘को’, दुधकन्ना ‘कौ’, मस्ते ‘कं’, कविसर्ग ‘क:’; संगहि पूर्णविरामकेँ तिरहुतामे ‘पासी’ कहल जाइत अछि। 16
मैथिली भाषाविज्ञानक दृष्टिएँ सेहो अत्यन्त सुदृढ भाषा अछि। एहिमे अनेक ध्वन्यात्मक विशेषता अछि, जे एकरा अन्य भाषासँ पृथक्, विशिष्ट पहिचान दैत अछि। मैथिली भाषामे प्राय: अन्तिम ध्वनि ह्रस्वान्त भेटैत अछि। मुदा कखनहुँ काल ई ह्रस्वहुँसँ ह्रस्व रूपमे

भेटैत अछि।, जेना-पानि, आगि -आदि। मैथिलीमे य, व, ष, श, ऋ, ण आदि वर्णक प्रयोग प्रायः नहि होइछ। ई वर्णसभ तत्सम वा विदेशज शब्दक संग मैथिलीमे अभडैत अछि; जेना- ऋण- रिन, यज्ञ- जाग आदि। स्वतंत्र रूपसँ इकारान्तक प्रयोग दीर्घ 'ई'क रूपमे होइत अछि, जेना- ई पोथी आदि; मुदा आन कोनो वर्णक संग शब्द वा पद रूपमे 'ई' ह्रस्व भ' जाइत अछि, जेना - जुलाइ (जुलाई), मइ (मई), सफाइ (सफाई), सलाइ (सलाई) आदि। मुदा एकर किछु अपवाद सेहो अछि, जेना- ईश्वर, ईसा, ईस्वी (ईसवी) इत्यादि। मैथिली वर्ण ध्वनिक अनुरूप अन्य भाषाक तुलनामे बेसी वैज्ञानिक अछि, इएह कारण अछि जे एकर प्रथम कल्पमे 'य' क स्थानपर 'ए', 'ण' क स्थानपर 'न', अनुस्वार (ं) क लेल 'ड.' आदि प्रयुक्त होइत अछि, जेना- कयल- कएल, सय-सए, भय-भए, ऋण-रिन आदि। मैथिलीमे पंचमाक्षरक अन्तिम वर्ण जँ संयूक्ताक्षरक रूपमे प्रयुक्त होअए, तँ प्रथम कल्पमे वर्णे कैं राखल जाइत अछि, जेना- अंक-अड्.क, पंकज- पड्.कज आदि। मैथिलीक उद्भव संस्कृतसँ भेल अछि, तेँ एहिमे संस्कृते जेकाँ श्लिष्ट भाषाक गुण भेटैत अछि। एहिमे हिन्दी जेकाँ कारक- विभक्तिकैं हटाए कए नहि लिखल जाइछ, रामक (मै.), रामस्य (सं.),, राम का (हि.) आदि। मैथिलीमे कारक-विभक्ति रूप एहि प्रकारेँ अछि- कर्ता-0 (मै.)- ने (हि.); कर्म- कैं, काँ (मै.)- को (हि.), करण- सँ (मै.) - से (हि.); सम्बन्ध- क, केर (मै.)- का (हि.); अधिकरण - मे, पर (मै.)- में, पर (हि.) आदि।

1.6 मैथिली भाषाक वर्तमान स्थिति

मैथिली भाषाक इतिहास समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषासँ प्राचीन अछि। एकर समस्त साहित्यिक विधा पूर्णतः सशक्त अछि, जे एकरा एकटा समृद्ध भाषाक श्रेणीमे ठाढ करैत अछि। मैथिलीक प्राचीनता आ' साहित्यिक समृद्धिकैं देखैत सन् 1965 ईस्वीए सँ एकरा भारत सरकारक सर्वोच्य साहित्यिक संस्थासँ मान्यता भेटि चुकल अछि आ' चारि विधा - मूल पोथी, अनूदित पोथी, बाल साहित्य आ' युवाकृत साहित्यपर पृथक् -पृथक् पुरस्कार प्रदान कएल जा रहल अछि। साहित्य अकादेमी द्वारा सन् 1966 सँ मूल पुरस्कार, 1979 सँ अनुवाद पुरस्कार, 2010 सँ बाल पुरस्कार तथा 2011 ई. सँ युवा पुरस्कारसँ मैथिली भाषाक साहित्यकारलोकनिकैं पुरस्कृत कएल जाए रहल अछि। सन् 1972'सँ बिहार लोक सेवा आयोगमे तथा 2006'सँ संघ लोक सेवा आयोगमे एक वैकल्पिक विषयक रूपमे मान्य अछि आ' प्रतिवर्ष कतोक सए मैथिली विषयक अभ्यर्थी चयनित भ' सम्पूर्ण देशमे, विभिन्न प्रशासनिक पदाधिकारीक रूपमे राष्ट्र सेवा क' रहल छथि। मैथिली भारतक एक संवैधानिक भाषा थिक, जकरा भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे 7 जनवरी, 2024 ई. सँ मान्यता भेटि चुकल अछि। मैथिली भाषाक पढौनी माध्यमिक स्तरसँ उच्च शिक्षा धरि बिहारक प्रायः समस्त पारम्परिक विश्वविद्यालय, झारखण्ड एवं नेपालक त्रिभुवन आ' पेर्वांचल विश्वविद्यालयमे भ' रहल अछि। पूर्वमे ई 1917 ई. सँ कलकत्ता विश्वविद्यालयमे आ' 1926 ई. सँ वनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमे पढाओल जाइत छल; मुदा कतिपय राजनीतिक कारणेँ एहि दुनू विश्वविद्यायमे बन्द करबाए देल गेल। वर्ष 2018 ई. सँ झारखण्डमे द्वितीय राजभाषाक रूपमे तथा 2007 ई. सँ नेपाल सरकार द्वारा नेपालक संवैधानिक भाषाक रूपमे मैथिलीकैं मान्यता भेटि चुकल अछि। एकर अलादा बंगला देशक ढाका विश्वविद्यालयमे सेहो 'कविकोकिल विद्यापति' नामसँ एक विषयक रूपमे उच्च शिक्षाक सिलेवशमे, मैथिलीकैं सम्मलित कएल गेल अछि। मुदा, दुखक संग कहए पडि रहल अछि, जे मैथिली राष्ट्र स्तरपर प्रतिष्ठित अछि, ओकरा अपनहिँ

घर बिहारमे उपेक्षित कएल जाइत रहल अछि। बिहारक 14 कडोर जनतामे सँ आधासँ बेसी करीब 8 कडोर मैथिली बजैत छथि। जे मैथिली भाषा-साहित्यिक, सांस्कृतिक रूपेँ पूर्णतः समृद्ध होअए, ओकरा बिहार सरकार द्वारा मान्यता नहि देब राजनीतिक षडयंत्र नहि तँ आ'र की भ' सकैछ? अतएब बिहार सरकारकेँ पूर्वाग्रह रहित मैथिली भाषाकेँ ओहि समस्त अधिकार, मान-सम्मान आ' प्रतिष्ठा प्रदान करबाक चाही, जकर ओ अधिकारी अछि।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहल जाए सकैछ जे मैथिली एक स्वतंत्र प्राचीन भाषा अछि जे बिहारक मिथिलाक्षेत्रमे आठ कडोर लोक द्वारा बाजल जाइत अछि। एकर अपन स्वतंत्र लिपि अछि। साहित्यिक दृष्टिएँ कोनहुँ समृद्ध भाषाक समकक्ष अछि। प्रतिवर्ष मैथिलीमे सेकडो पोथी विभिन्न विधासभमे प्रकाशित होइछ। मैथिलीमे इतिहास, भाषाविज्ञान, व्याकरण आ' अन्य साहित्यिक विधा अदौसँ एहन उर्वर रहल अछि जे राष्ट्रीय भाषाक कोन कथा, अन्तरराष्ट्रीय भाषाक संग कान्हमे कान्ह मिलाए चलबामे सक्षम अछि।अपन विशेष ध्वनिक कारणेँ ई विश्वक मधुरतम भाषाक कोटिमे अबैत अछि। स्पष्टतः आइ मैथिली अपन स्वर्णिम कालसँ अग्रसर होइत समस्त विश्वमे व्यापित होएबा दिस उन्मुख अछि।

संदर्भ- सूची:

[1] झा, विजयेन्द्र, 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. -855

[2] झा, रमानाथ, 1963, प्रबंध संग्रह, पृ.- 62-63

[3] झा, विजयेन्द्र, 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास, मुजफ्फरपुर :प्रतिभा प्रकाशन, पृ.-60

[4] वही, पृ.-60-61

[5] ग्रियर्सन, जार्ज अब्राहम, 1880, मैथिली ग्रामर,

[6] झा, डा. विजयेन्द्र, 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ.-416-17

[7] वही, पृ.-891

[8] झा, डा. इन्दुधर, डा. विजयेन्द्र झा (सं.), जुलाइ,2022, कोसा, शोध-पत्रिका (आलेख-एकैसम शताब्दीक मैथिली कविता, डा. विजयेन्द्र झा), मुजफ्फरपुरः मैथिली विभाग, ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय, पृ.-13

[9] डाक वचन संग्रह (भाग-1), रघुवीर बुक सेलर, मधुबनी, पृ.-1

[10] झा, डा. जयधारी सिंह,1966, बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धान्त, मधुबनी (दरभंगा) : श्री जयधारी सिंह, पृ. 6

[11] झा, विजयेन्द्र, 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास, मुजफ्फरपुरः प्रतिभा प्रकाशन, पृ.- 666-670

[12] वही, पृ.-876-880

[13] 'सुमन', प्रो. सुरेन्द्र झा, 1969, पयस्विनी (कविता-सरिता), पृ.-9

[14] मिश्र, डा. जयकान्त, 1988, मैथिली साहित्यक इतिहास, नइ दिल्ली, साहित्य अकादेमी, पृ. 23-24

[15] झा, डा. विजयेन्द्र, 2021, मैथिली व्याकरण ओ रचना, मुजफ्फरपुरः प्रतिभा प्रकाशन, पृ.-5-9

[16] झा, डा. विजयेन्द्र, 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुरः प्रतिभा प्रकाशन,पृ.- 555-56